डॉ० ओमप्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज, आरा

Date 19/09/20
Page

विषय- संस्कृत, बी० ए० स्नातक (प्रतिष्ठा)
द्वितीय वर्ष, तृतीय पत्र
शिवराज विजय

शिवराज विजय की कथावस्तु-

शिवराज विजय एक ऐतिहासिक उपन्यास है जो तीन विरामों में विभक्त है। प्रत्येक विराम में चार-चार निःश्वास हैं। संक्षेप में शिवराज विजय की कथा इस प्रकार है-

दक्षिण भारत में मुसलमानों के आधिपत्य तथा अत्याचारों से दुःखी शिवाजी अपने देश की आजादी के लिए युद्ध प्रारम्भ कर देते हैं। उस समय प्रत्येक दो-दो कोस पर आश्रमों का निर्माण किया गया था जो यवनों के गतिविधियों का परिचय दिया करते थे। शिवाजी के लगातार विजयी होने अफजल खाँ क्रोधित हो जाता है। वीजापुर के राजदरबार से आदेश पाकर शिवाजी से युद्ध करने जाता है। वीजापुर का शासक सन्धि के बहाने शिवाजी को जीवित पकड़ना चाहता है, परन्तु इस छल का पता शिवाजी को मिल जाता है। एक यवन गुप्तचर वीजापुर के राजा का सन्देश लेकर जा रहा था, रास्ते में उसने एक ब्राह्मण कन्या का अपहरण कर लिया। उसी समय ब्रह्मचारी गुरु के शिष्यों

गौर सिंह और श्याम सिंह के द्वारा वह कन्या ली जाती है और गुप्तचर मारा जाता है। संयोग से वह पत्र गौर सिंह को प्राप्त हो जाता है। जिससे अफजल खाँ की योजना का पता चल जाता है।

इस समाचार को जानकर शिवाजी स्वयं अफजल खाँ को छलने की एक योजना बनाते हैं। बीजापुर दरबार से भेजे गये पं० गोपीनाथ के द्वारा किले की तलहटी में अफजल खाँ से मिलने का प्रबन्ध शिवाजी ने किया। उसी समय गायक का वेष धारण करके गौर सिंह ने अफजल खाँ के शिविर में जाकर उसके षडयन्त्रों का पता लगाया। प्रातःकाल अफजल खाँ शिवाजी से मिलने आया। शिवाजी अपने कपड़ों के अन्दर 'बघनखा' नामक हथियार पहनकर गये और जैसे ही दोनों ने एक दूसरे का आलिंगन किया, शिवाजी ने उसकी ग्रीवा को पकड़कर पटक दिया तथा मुसलमान सैनिकों को मार भगाया।

गौर सिंह ने जिस ब्राह्मण कन्या की रक्षा की थी उसका संरक्षक एक वृद्ध ब्राह्मण था। उस ब्राह्मण के आने पर इस रहस्य का पता चलता है कि वह गौर सिंह एवं श्याम सिंह की बहिन सौवर्णी है और वह वृद्ध ब्राह्मण उनका पुरोहित देव शर्मा है।

Scanned with CamScanner

ब्रह्मचारी गुरु के कहने पर गौर सिंह अपनी सारी कहानी बतलाता है कि वे उदयपुर के राजगीर खड्गसिंह के पुत्र हैं जो माता-पिता की मृत्यु के पश्चात् तीनों भाई बहिन उस वृद्ध पुरोहित के संरक्षण में रहते थे। एक बार शिकार खेलते समय दोनों भाई लुटेरों के द्वारा पकड़ लिए जाते हैं। किन्तु अवसर पाकर दोनों घोड़ों पर सवार होकर भाग जाते हैं। तब एक हनुमान मन्दिर के अध्यक्ष की सहायता से वे दोनों महाराष्ट्र पहुँचे और वहीं भीमा नदी के तट पर उनकी शिवाजी से भेंट हुई। तभी से दोनों उसी आश्रम में रहने लगे।

इधर शाइस्ता खाँ पूना को जीतकर शिवाजी के किले में निवास करने लगा, जिसके कारण शिवाजी को उससे युद्ध करना अनिवार्य हो गया। शिवाजी ने रघुवीर सिंह के द्वारा अपना एक सन्देश तोरण दुर्ग के अध्यक्ष के पास भेजा। रघुवीर सिंह आँधी-पानी की परवाह न करता हुआ तोरण दुर्ग पहुँचता है तथा दुर्गाध्यक्ष की आज्ञा से हनुमान मन्दिर में विश्राम करता है। यह वही हनुमान मन्दिर है जिसमें देवशर्मा सौवर्णी को लेकर रहता था। मन्दिर के उद्यान में गाती हुई सौवर्णी के प्रति रघुवीर सिंह के हृदय में अनुराग उत्पन्न होता है। महाराज शिवाजी की आज्ञानुसार रघुवीर सिंह शाइस्ता खाँ के साथ होने वाले भविष्य के युद्ध के बारे में पूछने के

Scanned with CamScanner

लिए देवशर्मा के पास गया। देवशर्मा ने पुत्री तुल्य सौवर्णी के द्वारा उसे एक लड्डू खिलाकर उसके गले में एक माला डलवाया और प्रातःकाल आकर रात्रिकाल में दृष्ट स्वप्न का वृत्तान्त सुनाने के लिए कहा। प्रातःकाल दुर्गाध्यक्ष का प्रत्युत्तर लेकर वह देवशर्मा के पास आया और यवनों के साथ युद्ध में विजय तथा आर्यों के साथ युद्ध में पराजय का भविष्य जानकर उद्यान में गया। तब उद्यान में उसका सौवर्णी के साथ पुनर्मिलन हुआ। इसके पश्चात् वह हनुमान जी का प्रसाद ग्रहण कर सिंहदुर्ग को चल पड़ा।

एक बार शिवाजी ने ब्राह्मण का वेष धारण करके शाइस्ता खाँ के निवास स्थान पूना जाकर बहुत ही गुप्त रूप से वहाँ का निरीक्षण किया। चाँद खाँ को शिवाजी पर सन्देह होता है और वह उनका पीछा करता है तथा शिवाजी द्वारा उसका वध कर दिया जाता है। शिवाजी ने यशवन्त सिंह से पूना से दूर रहने का अनुरोध करके अपने कुछ चुने हुए सिपाहियों के साथ बारात के बहाने पूना में प्रवेश किया। तत्पश्चात् शाइस्ता खाँ का पुत्र रघुवीर सिंह के द्वारा मारा जाता है। इसी बीच शाइस्ता खाँ अपनी घायल उँगली के साथ खिड़की से कूदकर अपने प्राणों की रक्षा करता है। दूसरी ओर रघुवीर सिंह ने औरंगजेब की पुत्री रोशन आरा को गिरफ्तार कर लिया।

दूसरी ओर रघुवीर सिंह की प्रेमिका सौवर्णी क्रूर सिंह के द्वारा किये जाने वाले अत्याचारों की बात बतलाती है। तभी भाग्यवश क्रूर सिंह की नियुक्ति कहीं और हो जाती है और इसका कष्ट दूर हो जाता है।

इधर रोशनआरा शिवाजी के सामने अपना प्रेम प्रकट करती है। तब शिवाजी ने उससे कहा कि उसे तभी स्वीकार करेंगे जब उसके पिता उसे दे दें। और तभी जयसिंह ने आक्रमण कर दिया। शिवाजी ने उसके मन में हिन्दुत्व की भावना जाग्रत करने का पूरा प्रयास किया, परन्तु असफल रहने पर किन्हीं कारणों से वे यवनों के साथ सन्धि करने को विवश हो जाते हैं और इस सन्धि के अनुसार रोशनआरा और मुअज्जम को वापस कर दिया जाता है।

इसके बाद बीजापुर के एक दुर्ग पर आक्रमण करके रघुवीर सिंह के द्वारा शिवाजी विजयश्री पाकर गौरवान्वित हुए, परन्तु रहमत खाँ और क्रूर सिंह द्वारा रघुवीर सिंह को राजद्रोही बताए जाने पर शिवाजी द्वारा रघुवीर सिंह को निष्कासित कर दिया जाता है। बाद में ज्ञात होता है कि राजद्रोही क्रूर सिंह था।

अपमानित होकर रघुवीर सिंह राघव स्वामी का वेष धारण करके सदैव शिवाजी का उपकार करता रहा और सौवर्णी की

इच्छा करने वाले क्रूर सिंह को उसने मार डाला। जयसिंह की सन्धि के अनुसार शिवाजी 1666 ई० में बादशाह औरंगजेब की राजसभा दिल्ली में उपस्थित हुए। दिल्ली जाते समय राघव स्वामी (रघुवीर सिंह) ने उन्हें रोकने का कई बार सफल प्रयास किया किन्तु शिवाजी ने नहीं माना। राजदरबार में उपस्थित होने के बाद औरंगजेब शिवाजी को नजरबन्द कर महल के चारों ओर कड़ा पहरा लगा देता है। परन्तु स्वयं की योजना तथा राघव स्वामी (रघुवीरसिंह) की सहायता से शिवाजी अपने साथियों के साथ वहाँ से भाग निकलने में सफल हो जाते हैं। बाद में शिवाजी को जब यह ज्ञात होता है कि रघुवीर सिंह ही राघव स्वामी है तो उन्होंने रघुवीर सिंह से क्षमा याचना की। इसके बाद रघुवीर सिंह भी शिवाजी के साथ वापस लौट आता है। उसे मण्डलाधीश बनाकर उसकी प्रेयसी सौवर्ण के साथ उसका विवाह करा दिया जाता है। शिवाजी ने विवाह में सम्मिलित होकर आशीर्वाद प्रदान कर उन्हें कृतार्थ किया। उधर दूतों के द्वारा सूचना दी जाती है कि सन्धि के शर्त के अनुसार मुगलों को दिये गये सारे दुर्ग पुनः जीत लिये गये हैं।

इसके पश्चात् शिवाजी सतारा को अपनी राजधानी बनाकर रहने लगे और कुछ ही दिनों में सम्पूर्ण महाराष्ट्र पर शिवाजी का एकछत्र राज्य हो गया। औरंगजेब द्वारा प्रेषित सेनापति मोहब्बत खाँ को वापस भगा दिया जाता है।

॥ इति ॥